

॥ ब्रह्मसूक्तम् ॥

(तैत्तिरीयब्राह्मणे अष्टकम् - २ / प्रपाठकः - ८ / अनुवाकः - ८ / पञ्चादयः - ६६-६९)

ब्रह्मं जज्ञानं प्रथमं पुरस्तात्। वि सीमन्तः सुरुचौ वेन आवः।
स बुध्नियो उप मा अस्य विष्ठाः॥६६॥

सतश्च योनिमसंतश्च विवः। पिता विराजामृषभो रयीणाम्।
अन्तरिक्षं विश्वरूप आविवेश। तमर्कैरभ्यर्चन्ति वत्सम्। ब्रह्म
सन्तं ब्रह्मणा वर्धयन्तः। ब्रह्म देवानंजनयत्। ब्रह्म विश्वमिदं
जगत्। ब्रह्मणः क्षत्रं निर्मितम्। ब्रह्म ब्राह्मण आत्मना।
अन्तरस्मिन्निमे लोकाः॥६७॥

अन्तर्विश्वमिदं जगत्। ब्रह्मैव भूतानां ज्येष्ठम्। तेन कौऽर्हति
स्पर्धितुम्। ब्रह्मन्देवास्त्रयस्त्रिंशत्। ब्रह्मन्निन्द्रप्रजापती। ब्रह्मन्
ह विश्वा भूतानि। नावीवान्तः समाहिता। चतस्र आशाः
प्रचरन्त्वग्नयः। इमं नो यज्ञं नयतु प्रजानन्। घृतं पिन्वन्नजरं
सुवीरम्॥६८॥

ब्रह्म समिद्धवत्याहुतीनाम्।